CBSE Class 10 Hindi B Learning Outcomes 2021-22

कक्षा 10

सीखने- सखाने की प्र क्रया	सीखने के प्रतिफल
सभी वद्या र्थयों को समझते हुए सुननेए बोलने पढ़ने लखने और परिवेशीय सजगता को ध्यान में रखते हुए व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिए जाएँ ता क - • संगीत, लोक-कलाओं फल्म, खेल आदि की भाषा पर पाठ पढ़ने या कार्यक्रम के दौरान गौर से करने/सुनने के बाद संब धत गति व धयाँ कक्षा में हों। वद्या र्थयों को प्रेरित कया जाए क वे आस पास की ध्वनियों और भाषा को ध्यान से सुनें और समझें। • उन्हें इस बात के अवसर मलें क वे रे डयो और टेली वज़न पर खेल, फल्म एवं संगीत तथा अन्य गति व धयों से संब धत कार्यक्रम देखें/सुनें और उनकी भाषा, लय संचार-संप्रेषण पर चर्चा करें। • रे डयो और टेली वज़न पर राष्ट्रीय, सामाजिक चर्चाओं को सुनने/देखने और सुनाने/समझने तथा उन पर टिप्पणी करने के अवसर हों। • अपने आस-पास के लोगों की ज़रूरतों को जानने के लए उनसे साक्षात्कार और बातचीत के अवसर सुलभ हों, ऐसी गति व धयाँ पाठ्यक्रम का हिस्सा हों। • हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने-लखने (ब्रेल तथा अन्य संकेत भाषा में भी) और उन पर बातचीत की आज़ादी हो। • अपने अनुभवों को स्वतंत्र ढंग से लखने के अवसर हों। • अपने परिवेश, समय और समाज से संब धत रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों। • अपनी भाषा गढ़ते हुए लखने की स्वतंत्रता हो। • स क्रय और जागरूक बनाने वाले स्त्रोत अखबार एवं पत्रिकाएँ .फल्म और अन्य दृश्य-श्रव्य सामग्री को देखने व सुनने पढ़ने और लखकर अ भव्यक्त करने संबंधी गति व धयाँ हों। • कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को वक सत करने वाली गति व धयों, जैसे- अ भनय, भू म का निर्वाह (रोल-प्ले), क वता पाठ, सृजनात्मक लेखन, व भन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों तथा उनकी	वद्यार्थी- • अपने परिवेशगत अनुभवों पर अपनी स्वतंत्र और स्पष्ट राय मौ खक एवं ल खत रूप में व् यक्त करते हैं। जैसेक- मुसकान आजकल चुप क्यों रहत हैघ् मुसकान को स्कूल में हम लाएँगे। • अपने आस-पास और स्कूली सा थयों की ज़रूरतों को अपनी भाषा में अ भ व् यक्त करते हैं। जैसे- भाषण या वाद ववाद में इन पर चर्चा करते हैं। • आँखों से न देख सकने वाले साथी की ज़रूरत की पाठ्यसामग्री को उपलब्ध कराने के संबंध में पुस्तकालयाध्यक्ष से बोलकर और लखकर निवेदन करते हैं। • न बोल सकने वाले साथी की बात को समझकर अपने शब्दों में बताते हैं। • नई रचनाएँ पढ़कर उन पर परिवार एवं सा थयों से बातचीत करते हैं। • रे डयो, टी.वी. या पत्र-पत्रिकाओं व अन्य श्रव्य-दृश्य संचार माध्यमों से प्रसारित, प्रका शत रूप को कथा साहित्य एवं रचनाओं पर मौ खक एवं ल खत टिप्पणी/वश्लेषण करते हैं। • पत्रिका पर प्रसारित/प्रका शत व भन्न पुस्तकों की समीक्षा पर अपनी टिप्पणी देते हुए वश्लेषण करते हैं। • अपने अनभुवों एवं कल्पनाओ को सजृनात्मक ढंग से लखते हैं। जैसेक- कोई यात्रा वर्णन, संस्मरण लखना। • क वता या कहानी की पुनर्रचना कर पाते हैं। जैसे- कसी च र्चत क वता में कुछ पंक्तियाँ जोड़कर नई रचना बनाते हैं। • औपचारिक पत्र, जैसे- प्रधानाचार्य, संपादक को अपने आस-पास की समस्याओ/मुद्दों को ध्यान में रखकर पत्र लखते हैं। • रोज़मर्रा के जीवन से अलग कसी घटना/स्थिति - वशेष में भाषा का काल्पन क और सृजनात्मक प्रयोग

तैयारी से संबंधत स्क्रिप्ट (पटकथा) लेखन और रिपोर्ट लेखन के अवसर सुलभ हों। • अपने माहौल और समाज के बारे में स्कूल तथा व भन्न पत्र-पत्रिकाओं में अपनी राय देने के अवसर हों। • कक्षा में भाषा-साहित्य की व वध छ वयों/वधाओं के अंतरसंबंधों को समझते हुए उनके परिवर्तनशील स्वरूप पर चर्चा हो, जैसे - आत्मकथाए जीवन, संस्मरण, क वता, कहानी, निबंध आदि। • भाषा-साहित्य के सामाजिक - सांस्कृति-सौंदर्यात्मक पक्षों पर चर्चा ध वश्ले षण करने के अवसर हों। • संवेदनशील मुद्दों पर आलोचनात् मक वचार वमर्श के अवसर होंए जैसे- जाति, धर्म, रीति -रिवाज़, जेंडर आदि। • कृ ष, लोक-कलाओं, हस्त-कलाओं लघु-उद्योगों को दखेने और जानने के अवसर हों और उनसे संबंधत शब्दावली को जानने और उनके उपयोग के अवसर हों। • कहानी, क वता, निबंध आदि वधाओ में व्याकरण के ववधि प्रयोगों तथा उपागमों पर चर्चा के अवसर हों। • वद्यार्थी को अपनी व भन्न भाषाओं के व्याकरण से तलुना/समानता देखने के अवसर हों। • रचनात्मक लेखनए पत्र-लेखनए टिप्पण, अनच्छेद-गद्य-पद्य के सभी रूपों में, निबंध, यात्रा वृतांत आदि लखने के अवसर हों। • उपलब्ध सामग्री एवं भाषा में व्य करण के मौ लक प्रयोग की चर्चा एवं वश्लेषण के अवसर हों। • दैनिक जीवन मे भाषा के उपयोग के व वध प्रकार एवं परिवेशगत/अनुभव-आधारित-रचनात्मक लेखन के अवसर उपलब्ध हों।	करते हुए लखते हैं। जैसे- दिन में रात, बिना बोले एक दिन, बिना आँखों के एक दिन आदि। • पाठ्यपस्तुकों में शा मल रचनाओं के अतिरिक्त अन्य क वता, कहानी, एकांकी को पढ़ते- लखते और मंचन करते हैं। • भाषा-साहित्य की बारीकयों पर चर्चा करते हैं, जैसे क- व शष्ट शब्द-भंडार, वाक्य-संरचना, शैली के प्रयो गक प्रयोग एवं संरचना आदि । • व वध साहित्यिक वधाओं के अंतर को समझते हुए उनके स्वरूप का वश्लेषण निरूपण करते हैं। • व भन्न साहित्यिक वधाओं को पढ़ते हुए व्याकर णक संरचनाओं पर चर्चा/टिप्पणी करते हैं। • प्राकृतिक एवं सामाजिक मद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रति क्रया को बोलकर/लखकर व्यक्त करते हैं। • फल्म एवं वज्ञापनों को देखकर उनकी समीक्षा लखते हुए। • दृश्य माध्यम की भाषा का प्रयोग करते हैं। • परिवेशगत भाषा प्रयोगों पर प्रश्न करते हैं। जैसे- रेलवे स्टेशन/एयरपोर्ट/बस स्टैंड, ट्रक, ऑटोरिक्शा पर लखी कई भाषाओं में एक ही तरह की बातों पर ध्यान देंगे। • अपने परिवेश को बेहतर बनाने की को श श में सृजनात्मक लेखन करते हैं। जैसे- क्या-क्या रिसाइक लंग कर सकते हैं, और पेड़ों को कैसे बचाएँ। • हस्त कलाए वास्तुकला, खेती-बाड़ी के प्रति अपना रुझान व्यक्त करते हैं तथा इनमें प्रयुक्त कलात्मक संदर्भों/भा षक प्रयोगों को अपनी भाषा में जोड़कर बोलते- लखते हैं।

समावेशी शिक्षण व्यवस्था के लिए कुछ सुझाव

कक्षा में सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या समान रहती है एवं कक्षा-गतिविधियों में सभी बच्चों की प्रतिभागिता होनी चाहिए। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या में कई बार रूपान्तरों की आवश्यकता होती है। दिए गए सीखने के प्रतिफल समावेशी शिक्षण व्यवस्था के लिए हैं, परंतु कक्षा में ऐसे भी बच्चे होते हैं जिनकी कुछ विशेष आवश्यकताएँ होती है, जैसे-दृष्टि-बाधित, श्रव्य-बाधित इत्यादि । उन्हें अति रिक्त सहयोग की आवश्यकता होती है। उनकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित हैं-

- अध्यापक द्वारा विभिन्न प्रारूपों (जैसेक- पत्र लेखन, आवेदन आदि) को मौखिक रूप से समझाया जा सकता है।
- विद्यार्थियों को बोलकर पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
- अध्यापक बातचीत के माध्यम से कक्षा में संप्रेषण कौशल को बढ़ा सकते हैं।
- नए शब्दों की जानकारी ब्रेल लिपि में अर्थ सहित दी जानी चाहिए।
- दैनिक गतिविधियों का मौखिक अर्थपूर्ण भाषिक अभ्यास।
- शब्दों का विस्तृत उच्चारणगत हो, जैसे - मनट, विशाल, समुद्र, छोटे जीव तथा कीट इत्यादि।
- प्रश्नों का निर्माण करना और बच्चों को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करना। साथ ही बच्चों को भी प्रश्न-निर्माण करने को कहना और स्वयं उनका उत्तर तलाश करने के लिए कहना।
- उच्चारण सुधारने के लिए ऑडियो सामग्री का प्रयोग और कहानी सुनाना। अलग-अलग तरह की आवाज़ों की रिकॉर्डिंग करकेए जैसे- झरना, हवा, लहरें, तूफ़ान, जानवर और परिवहन, ताकि उनके माध्यम से संकल्पना/धारणा/विचार को समझाया जा सके।
- विद्यार्थियों को एक - दूसरे से बातचीत के लिए प्रेरित करना।
- अभिनय, नाटक और भूमिका-निर्वाह (रोल-प्ले) का प्रयोग करने के लिए प्रेरणा देना।
- पढ़ाए जाने वाले विषय पर दृश्य-शब्द कोश की शीट तैयार की जाए जैसे- शब्दों को चित्रों के माध्यम से दिखाया/बताया जाए।
- बोर्ड पर नए शब्दों को लिखना। यदि उपलब्ध हो तो शब्द कोश के शब्दों को चित्र के माध्यम से प्रयोग किया जाए।
- नए शब्दों को बच्चों के रोज़मर्रा के जीवन में इस्तेमाल करना और विभिन्न प्रसंगों में उनका प्रयोग करना।
- शीर्षक और विवरण के साथ दृश्यात्मक तरीके से कक्षा में शब्दों का प्रयोग करना।
- स्पष्ट रूप से समझाने के लिए फुटनोट को उदाहरण के साथ लिखना।
- संप्रेषण के विभिन्न तरीकों (जैसेकृ मौखिक एवं अमौखिक ग्राफिक्स, कार्टून्स (बोलते हुए गुब्बारे), चित्रों, संकेतों, ठोस वस्तुएँ एवं उदाहरण) का प्रयोग करना।
- लिखित सामग्री को छोटे-छोटे एवं सरल वाक्यों में तोड़नाए संक्षिप्त करना तथा लेखन को व्यवस्थित करना।
- बच्चों को इस योग्य बनाना कि वे रोज़मर्रा की घटनाओं को साधारण ढंग से डायरी, वार्तालाप, जर्नल, पत्रिका इत्यादि के रूप में लिख सकें ।
- वाक्यों की बनावट पर आधारित अभ्यासों को बार-बार देना, ताकि बच्चा शब्दों एवं वाक्यों के प्रयोग को ठीक ढंग से सीख सके । चित्रों/समाचारों/समसामयिक घटनाओं से उदाहरणों का प्रयोग करें।
- बच्चों के स्तर के अनुसार उन्हें पाठ्य-सामग्री तथा संसाधन प्रदान करना।
- पाठ में आए मुख्य शब्दों पर आधारित तरह-तरह के अनुभवों को देना।

- कलर को डंग (Color Coding) प्रयोग करना (जैसे- स्वर एवं व्यंजन के लए अलग-अलग रंगों का प्रयोग), कांसेप्ट मैप (Color map) तैयार करना।
- प्रस्तुति करण के लए व भन्न शैली एवं तरीकों, जैसे- दृश्य, श्रव्य, प्रायो गक शक्षण इत्यादि का प्रयोग।
- अनुच्छेदों को सरल बनाने के लए उनकी जटिलता को कम कया जाए।
- सामग्री को और अ धक आकर्षक बनाने के लए भन्न- भन्न व चारों, नए शब्दों के
- प्रयोग, कार्डस, हाथ की कठपुतली, वास्त वक जीवन के अनुभवों, कहानी प्रस्तुतिकरण, वास्त वक वस्तु एवं पूरक सामग्री का प्रयोग कया जा सकता है।
- अच्छी समझ के लए ज़रूरी है क वषय से संब धत पृष्ठभू म के बारे में पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुए नई सूचना दी जाए।
- क वताओं का पठन, सम चुत भावा भव्यक्ति/अ भनय/गायन के साथ कया जाए।
- पाठों के परिचय एवं परीक्षण खंड अथवा आकलन में व भन्न समूहों के लए व भन्न प्रकार के प्रश्नों की रचना की जा सकती है।
- पठन-कार्य को अच्छा बनाने के लए दो-दो बच्चों के समूह द्वारा पाठ्यसामग्री को प्रस्तुत करवाया जाए।
- कठिन शब्दों के लए शब्दों के अर्थ या पर्यायवाची उन शब्दों के साथ ही कोष्ठक में लखे जाएँ। जिन शब्दों की व्याख्या ज़रूरी हो उन्हें व्याख्यायित कया जाए तथा सारांश को रेखां कत कया जाए।

सीखने के प्रतिफल-कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु

- सीखने के प्रतिफल सीखने- सखाने की प्र क्रया के दौरान शक्षकों तथा बच्चों को सखाने में मदद करने वाले सभी लोगों की सु वधा के लए वक सत कए गए हैं।
- माध्य मक स्तर (9-10) पर सीखने- सखाने की प्र क्रया और माहौल में वशेष अंतर नहीं कया गया है। यद्य प भाषा सीखने- सखाने के वकासात्मक स्तर में अंतर हो सकता है।
- भाषा सीखने के प्रतिफलों को ठीक ढंग से उपयोग करने के लए, दस्तावेज़ में प्रारं भक पृष्ठभू म दी गई है। इसे पढ़े, यह बच्चों की प्रगति को सही ढंग से समझने में मदद करेगी।
- इसमें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के आधार पर वक सत पाठ्यक्रम में नवीं और दसवीं कक्षाओं के लए हिंदी शक्षण के उद्देश्यों को दृष्टि में रखते हुए पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाएँ दी गई हैं।
- इन पाठ्यक्रम संबंधी अपेक्षाओं को वद्यार्थी तभी हा सल कर सकता है, जब सीखने के तरीके और कक्षा में अनुकूल माहौल हो।
- यद्य प हमारी को शश यही रही है क कक्षावार प्रतिफलों को दिया जाए, ले कन भाषा की कक्षा में सीखने के व भन्न चरणों को देखते हुए इस प्रकार का बारीक अंतर कर पाना मुश्किल हो जाता है।
- सीखने के प्रति फल बच्चे के मनोवैज्ञानिक धरातल को ध्यान में रखते हुए, सीखने की प्र क्रया के सभी अ धगमानुकूल तथ्यों व आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार कए गए हैं।
- ये प्रतिफल सीखने- सखा ने की प्र क्रया के दौरान सतत और समग्र आकलन में भी आपकी मदद करेंगे, क्यों क सीखने- सखाने की प्र क्रया के दौरान ही बच्चे को लगातार फ़ीडबैक (प्रतिपुष्टि) भी मलता जाएगा।
- इन प्रतिफलों की अच्छी समझ बनाने के लए पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम को पढ़ना-समझना बेहद ज़रूरी है।

- ये प्रतिफल वद्यार्थी की योग्य ताए कौशल, मूल्य, दृष्टिकोण तथा उसकी व्यक्तिगत और सामाजिक वशषेताओं से जुड़े हुए हैं। आप देखेंगे क वद्यार्थी की आयु, स्तर और परिवेश की व भन्नताओं के अनुसार प्रतिफलों के सद्धांत परिणाम में भी बदलाव आता है।
- समावेशी कक्षा को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम की अपेक्षाओं सीखने के तरीके और माहौल तथा प्रतिफलों के वकास में सभी तरह के बच्चों को ध्यान में रखा गया है।
- अलग-अलग शक्षार्थी-समूहों एवं भाषायी परिवेश के अनुसार उल्लि खत एक ही प्रतिफल का अलग-अलग स्तर संभव है, जैसे- लखने-पढ़ने या राय व्यक्त करने की दक्षता के अनुसार संबं धत प्रतिफलों का व वध स्तर हो सकता है।
- इस दस्तावेज़ में चह्नित कए गए प्रतिफलों के अतिरिक्त -प्रतिफलों की ओर भी अध्यापकों का ध्यान जाना चाहिए।